अन्ना, अरविंद और भ्रष्टाचार मुक्त भारत का सपना

अन्ना हजारे और अरविंद की राहें राजनीतिक पार्टी बनाने के मुद्दे पर अलग-अलग हो गई। हालांकि राजनीतिक पार्टी बनाने का फैसला अन्ना की ओर से ही आया था। तहलका को दिए एक साक्षात्कार में अरविंद केजरीवाल ने यह बताया है कि पुण्य प्रसून वाजपेयी ने अन्ना को राजनीतिक पार्टी बनाने की सलाह दी और वे इसके लिये तैयार हो गए। हालांकि अरविंद ने जब अन्ना को राजनीतिक पार्टी बनाने की याद दिलाई तो उनका जवाब था, 'पहले मैं वह कह रहा था अब यह कह रहा हूं। जब पहले मेरी बात मान ली थी तो अब भी मान लो।'

अन्ना ने कई मौकों पर साफ-साफ कहा कि अरविंद और मेरी राहें अलग हो चुकी है इसलिए वे सब नाम और पोस्टर इस्तेमाल में न लाएं। 'इंडिया अगेंस्ट करप्सन' के बैनर का इस्तेमाल न करने की सलाह अरविंद को अन्ना और किरण वेदी ने दी है। अन्ना आन्दोलनकारियों को राजनीतिक पार्टी नहीं बनाने की सलाह देते हैं। जबकि अरविंद का कहना है कि देश बिकने को है और जिस तरह संसाधनों की लूट चल रही है, अगर एसे ही चलने दिया गया तो शायद पांच साल में सब कुछ खत्म हो जायेगा। देश को बचाने के लिये मुझसे जो संभव हो सकेगा मैं वो सब जरूर करूर करुगां। अरविंद थोड़े-थोड़े दिनों पर कभी नेताओं का तो कभी कॉरपोरेट जगत द्वारा की जाने वाली धांधलियों का पर्दाफाष करने में जुटे है। अन्ना ने भी भारत को भ्रष्टाचार मुक्त बनाने के लिये 30 जनवरी 2013 से पूरे देश की यात्रा करने की बात कही है। वे एक करोड़ लोगों को अपने साथ अभियान में शामिल करने की बात कह रहे हैं। लेकिन सवाल है कि क्या अरविंद या अन्ना के रास्ते से भ्रष्टाचार से मुक्ति मिल सकेगी? क्या बगैर राजनीतिक हस्तक्षेप या राजनीतिक विचार या आदर्शों के यह सब संभव हो पायेगा? क्या भ्रष्टाचार की वजह पर चोट किए बगैर इससे मुक्ति पायी जा सकेगी? इन सवालों के अलावा कई और सवाल है, जो इन आंदोलनों की सीमाओं को दर्षाते हैं।

अन्ना और अरविंद ने चार दशक से भी ज्यादा समय से संसद में लटके लोकपाल कानून की वजाय कठोर 'जन लोकपाल, कानून' बनाने की मांग से अपने भ्रष्टाचार मुक्त भारत के अभियान की शुरुआत की थी। इस खेल में अन्ना और अरविंद के अलावा बाबा रामदेव भी बीच-बीच में उछलकूद मचाने की कोषिष करते रहे हैं। आजकल बाबा रामदेव नेपथ्य में चले गए मालूम होते हैं। अन्ना भी थोड़े निश्क्रिय से मालूम पड़ रहे थे, लेकिन हाल ही में एक प्रेस कांफ्रेस करके 15 लोगों को लेकर उन्होंने एक नया संगठन शुरू किया है। उन्होंने अभियान की शुरूआत लगभग तीन महीने बाद 30 जनवरी 2013 से शुरू करने की बात कही है। अरविंद ने राजनीतिक पार्टी बना ली और आगामी लोकसभा चुनाव में अपने उम्मीदवार भी चुनाव में उतारने की बात कही है। चुनाव लड़ने के बारे में अन्ना कहते हैं कि चुनाव में भागीदारी करना बहुत खर्चीला हो गया है, इसलिए इससे अलग होकर ही काम करना ठीक होगा। अरविंद ने, चुनाव लड़ा जाए या नहीं, को लेकर एक सर्वेक्षण करवाया था। उस सर्वेक्षण में शामिल लगभग 80 फीसदी लोगों का मत चुनाव लड़ने के पक्ष में था। लेकिन आविंद ने अभी तक जो भी कदम उठाए हैं, उससे लगता है कि वे मीडिया की सुर्खियों में बने रहना चाहते हैं। यही वजह है कि वे कभी रॉबर्ट वाड्रा, कभी नितिन गडकरी और कभी अंबानी बंधुओं तो कभी विदेशों में जमा काले धन के बारे में मीडिया को बता रहे हैं। अब सवाल यह उठता है कि क्या इनकी धांधलियों के बारे में लोगों को पहले से नहीं पता था? आप मुरादाबाद चले जाएं और रॉबर्ट वाड्रा के बारे में किसी भी चालीस की उम्र पार कर चुके व्यक्ति से पूछ लीजिए, शायद अरविंद द्वारा दी गई जानकारी से कुछ ज्यादा ही पता चल जायेगा। कैसे एक छोटे कद का व्यापारी नेहरू -गांधी परिवार का दामाद बनते ही बहुत रसूख वाला व्यक्ति बन गया? नितिन गडकरी के बारे में भी यह बात आम है कि मोपेड पर चलने वाला आदमी आज इतनी संपत्ति का मालिक कैसे बन बैठा? गडकरी के बारे में भाजपा और संघ के लोग भी कहते हैं कि वे व्यापारी है। वे व्यापारिक सोच वाले व्यक्ति हैं। उनकी राजनीतिक प्रतिभा पर तो सवाल उठते ही रहे हैं। अंबानी और उनके धंधे के फलने-फूलने की कहानी भी सबको पता है। अरविंद द्वारा किए गए खुलासे में से ज्यादातर बातें आम लोगों को पहले से ही पता थी। हालांकि अरविंद के पर्दाफाष का अपना महत्व है। लेकिन सवाल यह है कि आप कितने लोगों का पर्दाफाष करेंगे? इस बात के पिछले कुछ वर्षों के दौरान आए घोटाले की बाढ़ से आसानी से समझा जा सकता है। अब सवाल यह उठता है कि एक आदमी पच्चीस-तीस साल की उम्र तक खाक छानता रहता है और उसे अचानक कौन सा ऐसा पारस पत्थड़ मिल जाता है कि यह पांच या दस साल में दुनिया के रईस लोगों में शामिल हो जाता है। वहीं दूसरी ओर एक व्यक्ति साड़ी उम्र एड़ी-चोटी एक करता रहता है और अंतिम दम तक ईमानदारी की वजह से पनपी दिक्कतों से खुद को कोसता हुआ मुफलिसी में ही मर जाता है। यह सब पूंजीवादी व्यवस्था में ही संभव हो सकता है। पूंजीवाद में मुनाफा कमाने की छूट देती है। एक पूंजीपति या उद्योगपति कम लागत में तैयार वस्तु को अधिक-से अधिक मुनाफे पर बेचता है। मुनाफा कमाने पर कोई लगाम नहीं हैं। उद्योगपति अपने कर्मचारियों को कम-से-कम तनख्वाह देकर अधिक-से-अधिक काम निकाल लेना चाहता है। लाभ कमाने के लिए फैक्टरी को चलाने के नियम-कानून को ताख पर रखने की परंपरा भी हमारे यहां आम है। आर्थिक मामलों के अपराध को लेकर हमारे यहां कोई कठोर कानून की परंपरा भी नहीं हैं। मसलन, आप उत्पादन किए गए वस्तुओं पर कितना मुनाफा कमा सकते हैं, इसकी कोई रूपरेखा तय नहीं की गई है। निजी क्षेत्र की कम्पनियों मज़दूरों से कितने घंटे काम ले सकती है और उन्हें न्यूनतम कितनी मज़दूरी दे, इस बारे में भी कोई ठोस नियम-कानून नहीं है। ऐसे में अरविंद केजरीवाल टीम पर्दाफाष दस्ता ही बनकर रह जाएंगे। भ्रष्टाचार उपर से रिस-रिसकर अब तली तक पहुंच चुका है। आज की तारीख में सीधे-सीधे काम करवाने के लिए भी सिफारिष लगवाने और रिश्वत भेंट करने की जरूरत पड़ती है। राषण कार्ड से लेकर ड्राइविंग लाइसेंस बनवाने तक के लिए रिश्वत देनी पड़ती है।

ऐसे में अरविंद के पर्दाफाष से लोगों को एक बार लगता है कि शायद इससे देश की व्यवस्था पटरी पर लौट आये। जाहिर है कि देश तबाही के दौर से गुजर रहा है। हर तीसरा बच्चा कुपोषण का शिकार है। किसान यहां बड़े पैमाने पर आत्मदाह कर रहे हैं। आम जनता को अरविंद यह समझाने की भी कोशिष कर रहे हैं कि इन नेताओं और पूंजीपतियों के तिजौरियों में भरा पैसा आपका ही तो है। लेकिन वे ये कोई नई बात नहीं कह रहे हैं। आपको राजेश खन्ना अभिनीत फिल्म 'रोटी' की याद तो होगी ही। उस फिल्म में एक गाना है, 'ये पब्लिक है, ये सब जानती है। अजी अंदर क्या है, बाहर क्या है? सब जानती है।' लेकिन राजेश खन्ना के गाने और अरविंद के प्रेस कांफ्रस करके इन बातों के बताने से क्या अंतर आ जाएगा? यह एक राजनीतिक सवाल है और इसे समझे बगैर कुछ नहीं किया जा सकता है। इस बात को सत्ता में सलमान खुर्शीद और दिग्विजय सिंह भी समझते है। अरविंद के सीधे-सीधे चोट करने के बावजूद भी नेताओं की बेशर्मी देखिये कि वे किस तरह के बयान दे रहे हैं। दिग्विजय सिंह ने अरविंद केजरीवाल और राखी सावंत की तुलना करते हुए कहा कि दोनों कुछ दिखाना चाहते हैं लेकिन उनके पास दिखाने के लिए कुछ नहीं है। यह दिग्विजय सिंह की महिला विरोधी मानसिकता को भी दर्शाता है। अरविंद को पता है कि दिग्वजय सिंह ऐसी बयानबाजी क्यों कर रहे हैं। खिसयानी बिल्ली खंभा नोचें। कांग्रेस के नेताओं ने अन्ना और अरविंद को बार-बार चुनाव जीतकर संसद पहुंचने के लिए ललकारा है। अन्ना ये समझते हैं कि वोट की राजनीति में बहुत कीचड़ है और इसके लिए बहुत पैसों की भी दरकार होती है। अरविंद ने इसे स्वीकार किया है और वे इस कीचड़ को ठीक करने की बात कर रहे हैं। बात सही भी है कि अगर अच्छे लोग राजनीति में नहीं आयेंगे तो फिर बुरे लोगों को कोसते रहने से क्या फायदा होगा? लेकिन सवाल यह है कि भारत को भ्रष्टाचार से मुक्त कराने का सपना वोट की गंदी और गलीज राजनीति से गुजरकर ही पूरा किया जा सकेगा? जाहिर सी बात है कि इसे रास्ते से भ्रष्टाचार के मुद्दे पर ही 1974-75 में एक प्रयास जयप्रकाश नारायण ने भी किया था। उसकी परिणति आपकें सामने है। उस आंदोलन में शामिल कई ऐसे बड़े नाम कभी ताबूत तो कभी चारे घोटाले में शामिल रहे। भ्रष्टाचार का जन्मदाता पूंजीवाद है और इस समस्या को मिटाने के लिए रातों रात नेता नहीं तैयार किये जा सकते हैं। राजनीति के मैदान में आने के लिये उसकी बारीकियों को समझना होता है। राजनीति की बारीकियों को समझने के लिए आम जनता के बीच जाना होता है, उनसे सीखना होता है। जाहिर सी बात है कि पूंजीवाद अपने चरम पर है। वह पहले के मुकाबले ज्यादा संगठित और ताकतवर तरीके से पेश हुआ है इसलिए इसे समाप्त करने के लिए जनता को अपनी लड़ाई की तैयारी भी बहुत रणनीतिक तरीके से करनी होगी। इसकी तैयारी छोटे और बड़े स्तर पर चल भी रही है। पर ये लड़ाइयां अभी हाथ की पांच उंगलियों की तरह बिखरी हुई है, इन्हें समेटकर मुट्ठी की शक्ल में आना बाकी है। अरविंद के पास हौसला है, हिम्मत है, लेकिन उसकी सबसे बड़ी कमजोरी उसकी दृष्टिहीनता है। अन्ना के पास भी भ्रष्टाचार मुक्त भारत बनाने का कोई दृष्टिकोण नहीं है।

अन्ना और अरविंद व्यवस्था बदलने की बात कभी नहीं करते हैं। वे जानते हैं कि उनके सत्ता परिवर्तन की बात कहते ही उनसे मीडिया का समर्थन भी छिन जायेगा और सत्ता का कहर बढ़ जायेगा। दिल्ली के रामलीला मैदान में कांग्रेस और पटना में नीतिश कुमार की रैली एक ही दिन आयोजित हुई तो मीडिया ने उसे बहुत लंबा कवरेज दिया लेकिन दो-तीन दिन बाद इसी मीडिया ने पटना में आयोजित भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी (मालें) की विशाल परिवर्तन रैली की खबर को बहुत सस्ते में समेट दिया था। किसानों की रैली राजधानी दिल्ली में होती है तो यही मीडिया सड़क पर जाम लगाने की खबड़ चलाता है। मीडिया को टीआरपी चाहिए इसलिए उसे ऐसे तमाशों की दरकार है। अरविंद और अन्ना उनके लिये तमाशा से ज्यादा कुछ भी नहीं हैं। हालांकि जो भी हो इतना तो जरूर है कि अरविंद और अन्ना के आंदोलनों से जनता की लगातार बढ़ रही बेचैनी का पता तो जरूर चलता है दूसरी ओर सत्ता के मत में डूबे लोगों के अहंकार का भी लगातार प्रदर्शन हो रहा है इसलिए आने वाले दिनों में आम लोगों की राजनीति करने वालों को अन्ना और अरविंद की भीड़ को अपने साथ जोड़कर अपनी ताकत बढ़ाने के लिए मेहनत करनी होगी। इस बेचैन भीड़ को राजनीतिक प्रशिक्षण देना होगा तब शायद भ्रष्टाचार मुक्त भारत का सपना पूरा करने की लड़ाई की धार को बल मिलेगा।

-स्वतंत्र मिश्र

अन्ना और अरविंद व्यवस्था बदलने की बात कभी नहीं करते हैं। वे जानते हैं कि उनके सत्ता परिवर्तन की बात कहते ही उनसे मीडिया का समर्थन भी छिन जायेगा और सत्ता का कहर बढ़ जायेगा। दिल्ली के रामलीला मैदान में कांग्रेस और पटना में नीतिश कुमार की रैली एक ही दिन आयोजित हुई तो मीडिया ने उसे बहुत लंबा कवरेज दिया लेकिन दो-तीन दिन बाद इसी मीडिया ने पटना में आयोजित भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी (मालें) की विशाल परिवर्तन रैली की खबर को बहुत सस्ते में समेट दिया था।

शीला और पुलिस के बीच क्यों ठनी?

दिल्ली पुलिस मुख्यमंत्री शीला दीक्षित के अधीन नहीं है। इसलिये पुलिस को नीचा दिखाने में वह किसी विपक्षी दल एवं आंदोलनकारियों की भीड़ से पीछे नहीं रहना चाहती। इस के लिये उस एस डी एम का भी इस्तेमाल किया जा रहा है जिसे पीड़िता का बयान लेने सफ़दरजंग अस्पताल भेजा गया था। जिस आई सी यू में वीडियोग्राफ़ी के लिये डाक्टर व पीड़िता के परिजन ही राजी नहीं थे उसके लिये पुलिस को दोषी ठहराने का क्या औचित्य है? जो शीला दीक्षित व उनका सांसद बेटा दिल्ली पुलिस को दिल्ली सरकार के आधिन करने की मांग अलाप रहे हैं, वे अपने उन महकमों का हाल क्यों नहीं देखते जो पहले से उनके अधीन हैं? परिवहन, शिक्षा, जल बोर्ड, बिजली, कराधान, सिंचाई तथा पी डब्लू डी आदि कोई भी तो ठीक से नहीं चल पा रहा। सभी में लूट खसूट, भ्रष्टाचार व कुप्रबन्धन का बोलबाला है। पी डब्लू डी का जलवा तो, पिछले दिनों हुए राष्ट्रमंडल खेलों के दौरान सारा देश देख चुका है। पुलिस को अपने आधीन लेने के पीछे शीला का उद्देश्य कानून व्यवस्था सुधारना नहीं है, हो भी नहीं सकता शीला का दुख है तो केवल इतना कि जब दिल्ली के सभी महकमों से वह लूट प्राप्त कर सकती हैं तो पुलिस से प्राप्त हो सकने वाली लूट से वह क्यों वंचित रहे? पुलिस को अपने आधीन मांगने के पीछे उनका एकमात्र उद्देश्य है तबादलों व भर्तियों से होने वाली मोटी लूट को प्राप्त करना। इसके अलावा पुलिस कार्यों में दखलंदाजी से जो आय होगी वह अलग से। गैंगरेप में प्रयुक्त हुई बस का दिल्ली पुलिस ने गत 2 वर्षों में 9 बार चालान किया, 2 बार उसे कब्जे में लिया लेकिन अदालतों ने उसे छोड़ दिया क्योंकि कानून ऐसा है। लेकिन शीला का परिवहन विभाग, जो उसका परमिट रद्द कर सकता था, उसे बार-बार चलने का परमिट देता रहा। जाहिर है यह सब शीला की घूसखोरी की बदौलत ही हुआ।